खण्ड-एक

हिंदी बाल साहित्य

विविध आयाम

संपादक
डॉ. आर.एम. जाधव
डॉ. भगवान जाधव
डॉ. मुकुंद कवडे

ए.आर. पब्लिशिंग कंपनी
के-37, अजीत विहार, दिल्ली-110084

फ़ोन : +91 9968084132, +91 7982062594

arpublishingco11@gmail .com

HINDI BAAL SAHITYA : VIVIDH AAYAM-1
Edited by Dr. R. M. Jadhav, Dr. Bhagwan Jadhav, Dr. Mukund Kavde

ISBN : 978-93-94165-22-9
Criticism

© सम्पादकगण
प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : 650

कॉम्पैक्ट प्रिंटर, दिल्ली-110 032 में मुद्रित

32. बालमन के कुशल चितेरे-मुंशी प्रेमचंद का बाल साहित्य 184
—डॉ. सुनिता शिवशंकर बुंदेले

33. हिंदी साहित्य में बालविमर्श कहानियों के संदर्भ में 189
—डॉ. शिंदेमालती धोंडो पन्त

34. बाल साहित्य में जीवन मूल्य 195
—प्रो. डॉ. लक्ष्मण तुळशीराम काळे

35. हिंदी महिला नाटककारों के बाल नाटक 201
—प्रा. तुकाराम पाराजी गावंडे

36. हिंदी कहानी में बाल-विमर्श 208
—डॉ. वसंत माळी

37. वर्तमान परिपेक्ष्य में हिंदी बाल साहित्य की आवश्यकता 211
—डॉ. मंजुश्री वेदुला

38. प्रेमचंद की कहानी 'मिट्ठू' बालसाहित्य की धरोहर है 217
—डॉ. विलास तुकाराम राठोड

39. बाल मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में हिंदी बाल काव्य 220
—प्रा. डॉ. अनिल कुमार रामधन राठोड

40. बाल कवि दीनदयाल शर्मा के काव्य में बाल संवेदना 225
—डॉ. संजीव कुमार नरवाडे

41. हिन्दी बाल साहित्य में बाल मनोविज्ञान 234
—प्रा. डॉ. सादिक अली हबीब साब शेख

42. डॉ. परशुराम शुक्ल की बाल कविताओं में नैतिकता 239
—डॉ. एस. प्रीति

43. बाल जगत को संवेदनशीलता से उकेरने वाला लेखक प्रेमचंद 245
—डॉ. गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे

44. हिंदी बाल साहित्य की संक्षिप्त विकास यात्रा 250
—डॉ. अपराजिता जॉय नंदी

45. हिंदी बाल साहित्य का भाषावैज्ञानिक विश्लेषण 255
—डॉ. करिश्मा अय्युब पठाण

46. हिंदी बाल काव्य में 'डॉ. सुरेंद्र विक्रम का योगदान' 260
—डॉ. रजिया शहेनाज शेख अब्दुल्ला

47. हिंदी बाल साहित्य का इतिहास 264
—प्रा. योगीता भारतराव देशमुख

48. संवेदनशील व्यक्तित्व को गढ़ता दीनदयाल शर्मा का बाल कहानी संग्रह 269
—प्रा. डॉ. संजय गणपती भालेराव

43. बाल जगत को संवेदनशीलता से उकेरने वाला लेखक प्रेमचंद

डॉ. गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे
सहयोगी प्राध्यापक,हिंदी विभाग
महाराष्ट्र महाविद्यालय, निलंगा

बाल जगत को अपने लेखन के द्वारा अत्यंत बारिकियों से प्रेमचंद ने उकेरा है। साहित्य मात्र मनोरंजन का माध्यम न होकर अमुल -चुल परिवर्तन का माध्यम और साधन भी है। बाल साहित्य का अर्थ उस साहित्य से है, जो बालकों और किशोरों के मानसिक स्तर के अनुरूप उनकी जरूरतों को ध्यान में रखकर उन्हें समाज और परिवेश के बारे में सजग करने के उद्देश्य से लिखा गया हो। श्रेष्ठ बाल साहित्य बालकों का केवल मनोरंजन ही नहीं करता वरन् वह उन्हें एक संवेदनशील मनुष्य के रूप में विकसित होने की स्थितियां भी देता है। 'सुंदर' और 'असुंदर' को समझने की सीख देता है। अतः आवश्यक है कि बाल साहित्य सैद्धांतिक विचारधारा से हटकर बाल मनोविज्ञान पर आधारित हो। बाल साहित्य की सर्जना के समय अक्सर यह दुविधा बनी रहती है कि उसमें कितना यथार्थ हो और वह कितना कल्पना से भरा हुआ हो। तभी तो बच्चों के लिए लिखना केवल एक कला नहीं चुनाती भी है। इस चुनौती को बिरले लेखक ही उठा सकें है उन में प्रेमचंद का नाम अग्रणी है।

प्राचीन काल से हिंदी बाल साहित्य लेखन की ऐतिहासिक परंपरा पर दृष्टिपात करें तो पाते है कि पंचतंत्र की कथाएं बाल साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं। इसके साथ हितोपदेश, अमर कथाएं व अकबर बीरबल के किस्से बच्चों के साहित्य में सम्मिलित हैं। विष्णु शर्मा ने पंचतंत्र की कहानियों के माध्यम से शरारती राजकुमारों को अल्प समय में संस्कारित करने के लिए पशु-पक्षियों को माध्यम बनाकर उन्हें शिक्षाप्रद प्रेरणा दी। अरस्तू ने भी माना है- बच्चों की शैतानियों को सीमित और नियंत्रित करने के लिए उन्हें रोचक कहानियां सुनानी चाहिए यो देखा जाए तो भारतेंदु युग के पश्चात द्विवेदी युग में बाल साहित्य की रचना नियमित रूप से आरंभ हो चुकी थी। आज बाल साहित्य में जो कुछ भी उपलब्ध दिखता है उसकी आधारशिला उसी युग में रखी जा चुकी थी। उसी युग में स्वयं प्रेमचंद ने बाल मनोविज्ञान को केंद्र में रखकर बाल कहानियों की रचना की।

ऐतिहासिक दृष्टि से यह समय भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के अंतर्गत पश्चिमी संस्कृति के विरोध और स्वदेशी की भावना से प्रेरित था। हिंदी के साथ-साथ विभिन्न भाषाओं के रचनाकार भी बड़ों के साथ बच्चों में भी राष्ट्रीय भावना, स्वदेशी चेतना व सामाजिक-नैतिक मूल्यों के विकास के लिए रचनारत थे। प्रेमचंद ने सन् 1930 में 'हंस' के संपादकीय 'बच्चों को स्वाधीन बनाओ' शीर्षक के अंतर्गत लिखा था, ''बालक को प्रधानतः ऐसी शिक्षा देनी चाहिए कि वह जीवन में अपनी रक्षा आप कर सके। बालकों में इतना विवेक होना चाहिए कि वे हर एक काम के गुण-दोष को भीतर से देखे...।'' स्वयं की इसी कसौटी पर प्रेमचंद की कहानियां बच्चों को मानवीय संवेदनाओं के साथ साथ सामाजिक आचार-विचार, न्याय-अन्याय, उचित-अनुचित का संदेश देती हैं। सही और गलत का फर्क सिखाती है।

बच्चों के साहित्य में ज्यादा महत्त्वपूर्ण यह होता है कि सूक्ष्म से सूक्ष्म बात को जितना सहज व उतना आश्चर्यजनक बनाकर कैसे प्रस्तुत किया जाए। इस सहजता व आश्चर्य के सहारे ही हम उन्हें समाज, राष्ट्र, विचारधारा से जोड़ सकते है। प्रेमचंद द्वारा रचित आरंभिक कृतियों में महात्मा शेख सादी तथा रामचर्चा की गणना की जाती है रामचर्चा नामक पुस्तक में उन्होंने भगवान श्रीराम की कथा को सीधे-साधे शब्दों में लिखकर उनके जीवन और आदर्श से बालकों का परिचय करवाया है। जंगल की कहानियां संकलन में बच्चों के लिए 12 कहानियां हैं। जिनमें शेर और लड़का, पागल हाथी, मिट्ठू, पालतू भालू, मगर का शिकार तथा जुड़वां भाई आदि कहानियां प्रमुख हैं। दुर्गादास नामक ऐतिहासिक उपन्यास वीर दुर्गादास राठौड़ के जीवन की संघर्षपूर्ण वीरगाथा है, जो अपनी मातृभूमि के लिए अपने बलिदान हेतु कृतसंकल्प था। वीर दुर्गादास के जीवन और आदर्शों के वर्णन द्वारा बालकों में देशप्रेम की भावना जागृत करना लेखक का उद्देश्य रहा। इसकी भूमिका में उन्होंने माना है कि ''बालकों के लिए राष्ट्र के सपूतों के चरित्र से बढ़कर उपयोगी साहित्य का कोई दूसरा अंग नहीं है। इनसे उनका चरित्र ही बलवान नहीं होता, उनमें राष्ट्रप्रेम और साहस का संचार भी होता है।'' कलम, तलवार और त्याग- दो भागों में प्रकाशित इस रचना में लेखक ने राणा प्रताप, रणजीत सिंह, अकबर महान, विवेकानंद, गोपालकृष्ण गोखले, सर सैयद अहमद खां आदि देश के विभिन्न महापुरुषों के प्रेरणादायक और उद्‌बोधक शब्दचित्र अंकित किए हैं। इन सभी ऐतिहासिक और राजनीतिक नेताओं के चरित्रों के माध्यम से लेखक बच्चों मे वीर, उत्साह और देश प्रेम के भाव के साथ सच्ची लगन और अदम्य साहस का बीजवपन भी करना चाहता है जो केवल तत्कालीन समय ही नहीं वरन् आज के भी समय की भी आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त ईदगाह,

बड़े भाईसाहब, गुल्ली-डंडा, दो बैलों की कथा, परीक्षा, कजाकी, मंत्र आदि कहानियां भी सम्मिलित की जाती हैं। इस रचना संसार में गांव-कस्बा, शहर, जाति-पाति, हर वर्ग व मानसिक स्तर के भिन्न-भिन्न पात्र हैं जो किसी न किसी रूप में प्रभावित करते हैं। वस्तुतः प्रेमचंद कथा कहते नहीं रचते हैं। प्रेमचंद की कई बाल कहानियां बाल पाठकों ने अपनी पाठ्य पुस्तकों में पढ़ी हैं, जिससे उनमें साहित्य की पठन रुचि की अभिवृद्धि हुई। लेखक की यह सभी कहानियां हमारे आस-पास के बाह्य जगत के साथ हमारे अंतर्मन की भी अद्‌भुत सैर करवाती हैं। इनमें पशु-पक्षी, स्थावर-जंगम भी मनुष्य रूप में व्यवहार और बातें करते, अपना निर्णय व्यक्त करते दिखाए गए हैं। चाहे वो मिट्ठू कहानी का बंदर हो या पागल हाथी का मोती हाथी अथवा दो बैलों की कथा के हीरामोती बैल जैसे यादगार चरित्र।

कुत्ते की कहानी बाल/किशोर उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया अपने कथ्य व शिल्प में अनूठा उपन्यास है जिसे प्रेमचंद ने अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले ही लिखा था। 14 जुलाई सन् 1936 को इसकी भूमिका में बच्चों से बात करते हुए उन्होंने लिखा, "प्यारे बच्चों, तुम जिस संसार में रहते हो वहां कुत्ते बिल्ली ही नहीं, पेड़-पत्ते और ईंट-पत्थर तक बोलते हैं, बिल्कुल उसी तरह जैसे तुम बोलते हो और तुम उन सबकी बातें सुनते हो और बड़े ध्यान से कान लगाकर सुनते हो, उन बातों में तुम्हें कितना आनंद आता है। तुम्हारा संसार सजीवों का संसार है उसमें सभी एक जैसे जीव बसते हैं। उन सबों में प्रेम है, भाईचारा है, दोस्ती है जो सरलता साधु-संतों को बरसों के चिंतन और साधना से प्राप्त नहीं होती... तुम देखोगे कि यह कुत्ता बाहर से कुत्ता होकर भी भीतर से तुम्हारे ही जैसे बालक है। वही प्रेम और सेवा तथा साहस और सच्चाई है, जो तुम्हें इतनी प्रिय है...।"

मानव समाज की विसंगतियो पर सटीक व्यंग्य करता यह बाल उपन्यास केवल मनोरंजन कथा ही नहीं है बल्कि बच्चों के हृदय में जीव-जंतुओं के प्रति करुणा, सम्मान का भाव जागृत करना भी इसका उद्देश्य है। जीव-जंतुओं का यह जगत लेखक के ग्रामीण परिवेश का ही अटूट हिस्सा है। यह सच है पशु-पक्षियों का संसार बच्चों का प्रिय संसार है। इसलिए ऐसे पात्रों से बच्चे ज्यादा लगाव महसूस करते हैं। इस उपन्यास का नायक 'कल्लू' कुत्ता बच्चों में सहयता व संवेदनशीलता का बीजवपन करने में पूरी तरह समर्थ है। यहां लेखक समाज की विद्रूपताओं और भ्रष्ट व्यवस्था की पोल खोलता हुआ बताता है, "चौधरी बोले- अजी पुलिस का ढकोसला बहुत बुरा होता है, वे भी आकर कुछ न कुछ चूसते ही

है। मैंने तो इतनी उम्र में सैकड़ों बार इत्तलाएं की, मगर चोरी गई हुई चीज कभी न मिली।'' यह संवाद बताता है कि देश की पुलिस का चरित्र इतने बरस बीतने पर भी नहीं बदला। तुलसीदास तो बहुत पहले ही कह आए थे 'पेट की आगि' सबसे बड़ी है। प्रेमचंद यहां इसे कुछ और स्पष्ट करते हुए कहते हैं, ''पेट भी क्या चीज है, इसके लिए लोग अपने पराए को भूल जाते है, नहीं तो अपनी सगी माता और अपना सगा भाई क्यों दुश्मन हो जाते।'' पेट की इस विवशता के चलते लेखक बच्चों के हृदय में नैतिक मूल्यों, मानवीयता व संवेदनशीलता का स्रोत भी प्रवाहित करना चाहता है।

अन्य कहानियों में श्नादान दोस्तश केशव और श्यामा नामक भाई-बहन की कहानी है जो चिड़ियों के अंडों (बच्चों) के लिए खाने-पीने और देखभाल की व्यवस्था करते है पर जो अनजाने में ही श्रक्षा में हत्याश का कारण बनती है। बालमन मे व्याप्त पक्षी प्रेम सहानुभूति, परोपकार और बाल-नादानी की यह कथा अत्यंत रोचक है।

मित्रता के सरल भाव, उत्साह, अनुशासन तथा जाति वर्ग भेद से परे सख्य प्रेम को दर्शाती 'गुल्ली-डंडा' कहानी लोक प्रचलित पारंपरिक खेल गुल्ली-डंडे को भी स्थापित करती है। परीक्षा नामक कहानी 'जानकीनाथ' के माध्यम से ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, आत्मबल और धीरता की सीख देती है। इसी तरह 'मंत्र' कहानी गरीब फटे हाल बूढ़े वैद्य भगत के माध्यम से सज्जनता, उदारता, दया और मानवीयता का संदेश देने में पूरी तरह समर्थ है। यह सभी कहानियां बच्चों को एक संवेदनशील मनुष्य के रूप में विकसित होने की स्थितियां देती हैं साथ ही उनकी कल्पना शक्ति को भी उर्वर बनाती हैं तथा सामाजिक नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूक भी करती हैं।

इन कहानियों की चित्रात्मकता हृदयग्राही है। सरल भाषा-शैली और संक्षिप्त रोचक सहज संवाद बालमन और ज्ञान के अनुरूप जिज्ञासा का शमन करने वाले हैं। सजीवता, गतिशीलता व नाटकीय तत्व से भरपूर इन कहानियों के संवाद चरित्रों की पूरी छाप छोड़ने में सक्षम है।

आज के बच्चे कंप्यूटर गेम्स और महंगे मोबाइल के छद्म जाल की गिरफ्त में कैद होते जा रहे हैं, जिससे उनमें संयम, धैर्य, उदारता, सौहार्द, मानवीयता, सम्मान जैसे नैतिक मूल्यों का क्षय हो रहा है। वे सकारात्मकता की प्रवृत्ति छोड़ नकारात्मकता की ओर बड़ रहे हैं। आज हमारा समाज विभिन्न विसंगतियों, वैषम्यों, विद्रूपताओं और विकृतियों से जूझता हुआ नैतिक अवमूल्यन के दौर से गुजर रहा है जहां मानवीय संबंध तार-तार हो रहे हैं। जाति, वर्ग, धर्म की छद्म

अस्मिताएं अपने ध्वज फहरा रही हैं और सामाजिक संबंधों का ताना-बाना छिन्न-भिन्न हो रहा है। ऐसे समय में प्रेमचंद के बाल साहित्य की आवश्यकता और बढ़ गई है जो आज के संदर्भ में एक बार फिर बच्चों को दिशा बोध देकर एक अच्छा नागरिक बनने की प्रेरणा दे सकता है, उनमें सकारात्मक मूल्यों का विकास कर सकता है। साहित्य ही इसे सुयोग्य दिशा देने में सक्षम है।

स्पष्ट है कि, प्रेमचंद बाल जगत को अत्यंत बारिकियों से उकेरने वाला एक सजग बाल साहित्यकार हैं। प्रेमचंद ने बच्चों की संवेदनाओं को बड़े सादगीपूर्णता अभिव्यक्त किया है।